आग और पानी

(ग्रामीण साहित्य माला पुष्प—2)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

आग और पानी

लेखक
डॉ० प्रभाकर माचवे

सम्पादक
डॉ० सुशील गौतम

प्रकाशक
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रकाशक

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17 बी. इन्द्र प्रस्थ मार्ग
नई दिल्ली-2

प्रथम संस्करण : २,०००

द्वितीय संस्करण : ५,०००

मूल्य : 2.50 रुपये

रूप सज्जा
डॉ० सुशील गौतम

पुस्तक शृँखला संख्या 119

मुद्रक
मान-हरि प्रस
ए-३१, सेक्टर-२
नोयडा (यू० पी०)
फोन-८०५-२८०

भूमिका

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की ओर से ग्रामीण बहन-भाईयों को ग्रामीण साहित्य माला का प्रथम पुष्प भेंट करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यह साहित्य माला साक्षरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक आवश्यक कदम है। वास्तव में, साक्षरता की मूल समस्या अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के बाद की समस्या है। व्यक्ति लिखने पढ़ने में निरन्तर कुशल बना रहे उसके लिए आवश्यक है कि अक्षर ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद भी लिखने पढ़ने का अभ्यास जारी रखा जाए। लिखना पढ़ना जारी रखने के लिए सरल, मोहक, रोचक तथा उपयोगी पुस्तकों का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसका अर्थ यह भी है कि लेखकों को भी यथेष्ट अवसर प्रदान किए जाएं।

जो लोग प्रौढ़ शिक्षा में रुचि रखते हैं और प्रौढ़ों को पढ़ने लिखने के लिए बढ़ावा देना चाहते हैं उनके लिए सरल, उपयोगी और रोचक सामग्री उत्पादन करना बहुत आवश्यक है। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने ग्रामीण जनता के लिए साहित्य उत्पादन पर विचार विमर्श करने के लिए हिन्दी लेखकों की सहायता लेने तथा उनकी एक गोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया।

यह चर्चा, विचार विमर्श तथा गोष्ठी, 4 अगस्त 1978 से 6 अगस्त 1978 तक, नई दिल्ली में, आयोजित की गई। इसका उद्घाटन हिन्दी के जाने माने लेखक एवं संसद सदस्य श्री भगवती चरण वर्मा द्वारा किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ के सचिव श्री लक्ष्मी चन्द जैन ने इसका निर्देशन किया।

जिन मशहूर लेखकों ने इस चर्चा में भाग लिया उनमें से कुछ ये हैं :—

सर्वश्री जैनेन्द्र कुमार, हरबंसराय बच्चन, प्रभाकर माचवे, रमा प्रसन्न नायक, कमला रत्नम्, राजेन्द्र अवस्थी, मन्नू भण्डारी, राजेन्द्र यादव, इन्दु जैन, बालशौरी रेड्डी इत्यादि। कुछ मशहूर प्रकाशकों ने भी अपना-अपना दृष्टिकोण और अपनी समस्यायें प्रस्तुत करने की चेष्टा की। इन प्रकाशकों में से प्रमुख प्रकाशक थे सर्वश्री दीना नाथ मल्होत्रा, यशपाल जैन, कृष्ण चन्द्र बेरी, रघबीर शरण बंसल, शीला सन्धु इत्यादि।

हम इन सभी सहयोगियों के आभारी हैं कि उन्होंने कार्यशाला को महान सफलता प्रदान की। उन चर्चाओं के आधार पर ये दस पुस्तकें भेंट करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। हमें पूरी आशा है कि ग्रामीण जन समाज इसका खुशी से स्वागत करेगा, क्योंकि ये पुस्तकें उनके जीवन से, उनकी समस्याओं से, उनके परिवेश एवं उनकी संस्कृति से जुड़ी हैं।

हम यूनेस्को के आभारी हैं कि उन्होंने यह गोष्ठी आयोजित करने के लिए संघ को आर्थिक सहायता प्रदान की।

इस गोष्ठी में गोष्ठी के निर्देशक श्री लक्ष्मी चन्द जैन के कुशल निर्देशन एवं सूझ बूझ तथा प्रौढ़ शिक्षा की सम्पादिका श्रीमती बिमला दत्ता की लगन, मेहनत और भागदौड़ ने गोष्ठी को सफल बनाने में बहुत सहायता दी। संघ इनका भी बहुत आभारी है।

आशा है कि पाठकों को यह प्रस्तुत ग्रामीण साहित्य माला पसन्द आएगी।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17-बी इन्द्र प्रस्थ मार्ग
नई दिल्ली।
2 अक्टूबर 1978,

शिव चन्द्र दत्ता
अवैतनिक महासचिव,

आग और पानी

● डॉ० प्रभाकर माचवे

किशुनपुरा के ठाकुर माधो सिंह ने मूंछों पर मरोड़ देकर, गुस्से भरे स्वर में कहा—"अच्छा, तो कल के छोकरे सूरज की यह हिम्मत ? वह हमारी ताकत को पहचाने बिना ही हमसे टकराना चाहता है। मसल के रख देंगे, खटमल की तरह उसे।"

माधो सिंह के खुशामदी कारिन्दे सन्नू लाल ने आग में तेल छिड़कते हुए कहा—"ठाकुर साहब, वह तो यहाँ तक कह रहा था कि अब ये जमींदार कौन-सी हेकड़ी दिखा रहे हैं। अब तो अपना राज है। जनता का राज है। ये बड़े जात वाले अब वैसी मनमानी थोड़े ही कर सकते हैं।"

बीच में वहीं बैठा पन्ना सिंह बोल उठा—"चार किताबें क्या पढ़ लीं, शहर की हवा क्या खाली इनके दिमाग ही सातवें आसमान पर चढ़ गये हैं। अरे भाई, कभी सब इन्सान एक जैसे हो सकते हैं ? पांचों उंगलियाँ कभी बराबर नहीं होती। क्या समझ रखा है साले ने···" और दो-चार गालियाँ पन्ना सिंह ने दे डालीं।

ठाकुर माधो सिंह ने कहा—"इस तरह से नहीं मानेगा यह छोकरा। जाओ उसके बाप को बुलाओ। जिस पत्तल में खाता है उसी में छेद करता है।"

सन्नूलाल वहाँ से उठा। उसने अपनी लाठी सम्भाली और सूरज के बाप को बुलाने चल पड़ा। दुबली-पतलीकाया थी उसकी। वह डर रहा था कि कहीं नौजवान छोकरे मिलकर उस पर हमला न बोल दें। हरिजन बस्ती

में घूरे राम का घर क्या एक टूटी-टाटी झोंपड़ी थी। वह सूरज का बाप था। उसके जिम्मे उस गाँव के चमड़े का सारा काम था। मरे हुए जानवर की खाल खींचना, उसे बर की छाल के पानी में भिगोये रखना फिर उसे रंगना, पास के देहात में जाकर बेचना, गाँव वालों के जूते बनाना और फटे जूते सीना। जब से रबड़ और प्लास्टिक के जूते चल पड़े हैं, उसका काम भी कम हो गया है। घोड़े की जीन और बैलों के लिए चमड़े के पट्टे बनाना भी उसका काम था। बेचारे की आमदनी बहुत थोड़ी थी। बच्चे बहुत सारे थे। बड़े बेटे सूरज को गाँव की पाठशाला में पढ़ाया। मास्टर ने उसे पास की बड़ी बस्ती में भेजकर मैट्रिक तक की शिक्षा दिलवा दी। उसे वजीफा भी मिला। शहर जाकर उसने अब इंटर पास करली है। साइंस पढ़ता है। छुट्टी में अपने गाँव आया है।

हरिजन बच्चा है लेकिन साफ-सुथरा रहता है। यह बात गाँव वालों की आंख में खटकती है कि गरीब होकर अकड़ के किस दम पर चलता है?

सूरज अपने आसपास अपनी उम्र के और छोटे बच्चों को जमा करके कहानियाँ सुनाता--"जन्म से कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। मैं जिस शहर में पढ़ता हूँ, वहाँ ऊँची जाति वाले ब्राह्मण जूते की दुकान चलाते हैं। एक दूसरे लाला हैं। बूचड़खाने में और मांस के व्यापार में उनके हिस्से हैं। कहने को तो रोज सवेरे-शाम मंदिर जाते हैं और बड़ी-बड़ी बातें बनाते हैं। पैसे का कोई धर्म नहीं होता। कोई जात नहीं होती।"

बच्चे डर से पूछते--"क्या बोलते हो सूरज? तुम सब बड़ी जात वालों के साथ खाते-पीते हो?"

"हाँ, एक ही होटल में हम चाय भी पीते हैं और डबल रोटी भी खाते हैं।"

"और पानी? एक ही कुएं से पीते हो?"

हंसकर सूरज बोला--"ननकू, शहर में कुएं नहीं होते। वहाँ नल चलते हैं, नल की टंकी की सफाई जमादार करते हैं। किसी के चेहरे पर जात थोड़े ही लिखी रहती है। हमारे कॉलेज में सभी जातों वाले लड़के पढ़ते हैं।"

कलिया बोली--"लड़कियाँ भी पढ़ती हैं, तेरे साथ?"

"क्यों नहीं। वहाँ लड़के-लड़की का कोई फरक नहीं होता।"

"हाँ, एक बार गाँव में गोरी मेम और साहब आये थे। दोनों ने एक-सी पैंट पहन रखी थी। एक-सा कुर्त्ता था और एक-सा काला चश्मा।"

"इतनी अकल तुझे कहाँ से आ गई सूरज," एक और लड़के ने पूछा।

सूरज ने बिना डर या झिझक के कहा—"मैंने किताबें पढ़ीं हैं। मैंने कई बड़े आदमियों की जिंदगी के बारे में पढ़ा है। मुझे पता लगा कि जिसे हम कमजात और नीच कहते हैं, ऐसे तबकों से भी बहुत बड़े-बड़े लीडर और महापुरुष पैदा हुए हैं।"

"सच ?"

"पुराने जमाने में बड़े-बड़े संत और महापुरुष हुए जो नीची जाति के थे। अभी इसी सदी में भी कई महापुरुष हुए हैं—जैसे जोतिबाफुले, आंबेडकर,

कामराज और अन्नादुराई, संजीवैया और जगजीवन राम···।"

"ये सब और सूबों तथा और भाषा बोलने वालों में हुए होंगे।"

"नहीं हिन्दुस्तान के हर सूबे और हर भाषा बोलने वालों में कमजात कहलाने वालों में से बड़े-बड़े लोग पैदा हुए हैं।"

सब बच्चे जोर-जोर से चिल्लाये—"बोलो साथियों, सूरज राम की जै। भारत माता की जै।"

सूरज बोला—"अरे अरे, यह क्या करते हो ? मैं कोई नेता नहीं हूँ। मेरी जै बोलने से मैं तुम्हारा क्या अच्छा कर सकता हूँ।" मेरे हाथ में कोई ताकत नहीं। मैंने तो सिर्फ बताया—ज्ञान एक चिंगारी है, जो सारे अंध-विश्वासों और जड़ता के तिनकों के ढेर को जला देती है।"

जब ऐसी सब बातें चल रही थीं तभी धूरे राम की खोज में सन्नूलाल पहुँचा। इतने सारे लड़कों का जमघट देख वह दूसरी ओर चला गया। जब सब लड़के बिखर गये तो वह धीमे से उस झोपड़ी तक पहुँचा और चिल्लाया —"सूरज की माँ, सूरज की मां।"

गरीब हरिजन स्त्री बाहर आई। उसने सन्नूलाल को देखकर परदा किया—सहमते हुए पूछा—"क्या बात है ?"

"धूरे लाल कहाँ हैं ?"

"क्यों ?"

"अरे वो अपने ठाकुर साहब हैं न, उनके यहाँ कोई मेहमान आये हैं। जूते-बूते का काम था। भेज देना।"

"अच्छा।"

सूरज ने पूछा—"ये लोग क्यों बुलाने आते हैं ? यहीं क्यों नहीं जूते ले आते ?"

"अरे बेटा, वे ठहरे ऊँची जात वाले। भला वे यहाँ क्यों आने लगे, इस चमार की झोंपड़ी में ?"

"शहर में तो ऐसा नहीं होता मां। जूते की दुकान होती है और जिनको गरज होती है, वहाँ वे खुद ही पहुँच जाते हैं।"

"यहाँ गरज हमारी है। यह छोटा-सा गाँव है। हम उनकी दान-दया पर जीते हैं सूरज।"

"कोई किसी की दया-वया पर नहीं जीता। सब अपने-अपने काम की कमाई खाते हैं।"

पर जूते का काम, चमड़े का काम ऊँचा काम नहीं है, सूरज।"

"काम काम है। उसमें उँचा-नीचा नहीं होता मां।"

"यह बेटा तो झगड़ा कराके छोड़ेगा।"

"सच बात बोलने में क्या बुराई है। उससे डर क्या और उससे झगड़ा कैसे फैलता है?"

घूरे राम खेत पर बेगार करके शाम को लौटा तो बिना पानी पिये ही अपना सामान उठाकर ठाकुर साहब के घर चल दिया।

ठाकुर पहले से ही भरा बैठा था। घूरे को देखते ही आग-बबूला हो उठा—"साले, कमीने, क्या समझ रखा है, तुम लोगों ने? अगर जूते मार-मार कर तुम्हारी चमड़ी न उधेड़ दूँ तो मेरा नाम ठाकुर माधो सिंह नहीं।"

"पर हुजूर, मेरा क्या कसूर है?"

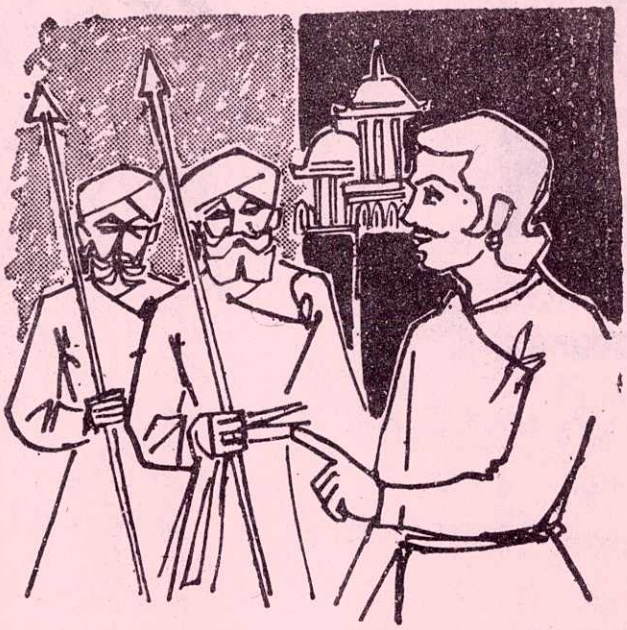

"तुमने आजकल मेरे खिलाफ बगावत शुरू कर दी है?"

"मैंने तो कभी कुछ नहीं कहा और न कुछ किया।"

"तुमने नहीं तो तुम्हारे बेटे ने किया होगा। वह नया-नया शहर से

आया है न। लाट साहब बनता है। ऐसा ही शौक है तो बेटे के साथ खुद चला जा शहर।"

"पर ठाकुर साहब, मेरी भी तो सुनिये। बेटा तो कल ही वापिस आया है छुट्टियों में। वह क्यों बोलेगा ठाकुर साहब के खिलाफ। आपको कुछ गलतफहमी हुई है।"

"हमें कहता है कि हम गलत हैं। सन्नू लाल जरा दो-चार लाठी तो इसको लगा। पिटाई होगी तभी यह उबड़ की धूल झटकेगा।"

सन्नू लाल लाठी मारने वाला ही था कि बीच में एक गरज जैसी आवाज सुनाई दी—"वहीं खड़े रहो, सन्नू लाल। कदम आगे बढ़ाया तो जानते हो नतीजा क्या होगा ? लाठी मेरे पास भी है।"

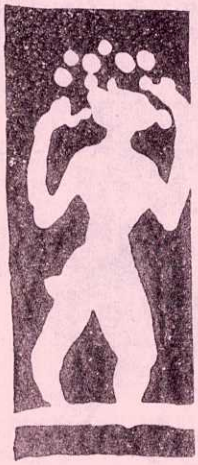

यह आवाज सूरज की थी।

माधो सिंह से अब रहा न गया--"इत्तासा बालिश्त बराबर लौंडा। और यह हिम्मत। सन्नू लाल देखते क्या हो ? अब दोनों को ही जरा प्रसाद चखाओ।"

मारामारी शुरू हो हो जाती कि गाँव की पंचायत के एक बूढ़े, जिन्हें सब मास्टर जी कहते थे, आ पहुँचे। वैसे तो वे मुसलमान थे। गाँव की मस्जिद की रखवाली करते और छोटा-सा मदरसा चलाते थे। अब्दुल गनी के आने से घूरे राम की ज्यादा हिम्मत नहीं हुई--मारपीट करने की।

अब्दुल गनी के आते ही माधो सिंह और घूरे राम उन्हें आदर से कहने लगे---"आइये मास्टर जी, आपके लिये कुर्सी ले आउँ ?"

"नहीं, नहीं मैं यहीं अच्छा हूँ।" पेड़ के नीचे एक खाट पर बैठते हुए बूढ़े ने अपनी दाढ़ी हाथ से सहलाते हुए पूछा---"बताओ भाई घूरे राम, क्या गुनाह किया तुमने ? और सन्नू लाल तुम्हारी क्या शिकायत है ? दोनों बातों से सुलह सफाई नहीं कर सकते ? एकदम लाठी बरसाने पर क्यों तुले हो ? आओ सूरज तुम भी यहाँ बैठ जाओ।"

अब पंचायत शुरू हुई। सबसे पहले घूरे राम बोला---"मास्टर जी, यह सन्नू लाल मेरे घर आया, और गाली देने लगा। बोला कि मैंने ठाकुर साहब का अपमान किया है···।"

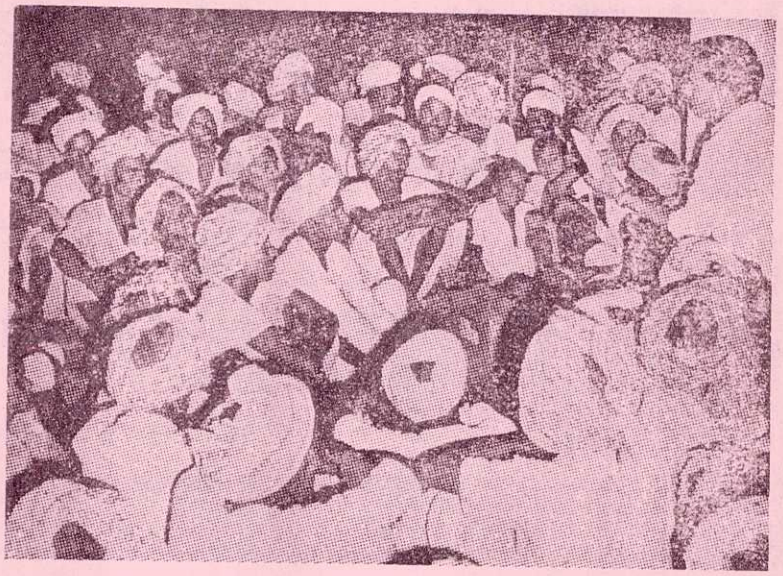

घूरे राम की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि उसे काटकर सन्नू लाल ने जोर-जोर से बोलना शुरू किया---"यह झूठ बोल रहा है। मैंने इसे सिर्फ कहा था कि ठाकुर साहब के घर मेहमान आये हैं, उनके जूते-उते ठीक करने हैं। पर इसके मिजाज देखो। बजाय काम करने के ये घूरे का लड़का सूरज मेरी तौहीन करने लगा···।"

सूरज ने डपट कर पूछा---"मैंने क्या कहा था रे। झूठ बोलता है।"

अब्दुल गनी ने सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा---"नये लड़के

हैं। शहर की हवा खाकर आये हैं। उनका नजरिया और है। अभी गाँव में जुम्मे-जुम्मे आठ रोज भी नहीं हुए आए। आटे दाल का भाव इन्हें क्या पता ?"

अब सन्नू लाल की हिम्मत और हुई—"अगर यही बात चलती रही तो गाँव में खून-खराबा होकर रहेगा। क्या समझ लिया है इन नीच जात वालों ने···।"

सूरज ने कड़क कर कहा—"नीच जात, ऊँच जात क्या होता है ? पता है ऐसा कहना कानून की निगाह में जुर्म है। तुम्हें ऐसा करने पर सजा हो सकती है।"

"ये कल के छोकरे कानून सिखाते हैं मुझको ? मैं ठाकुर साहब का पुश्तैनी कारिंदा हूँ। घूरे राम की तीन पुश्तों से ठाकुर साहब के घर के जूते बनाने का काम चल रहा है। ठाकुर साहब के टुकड़ों पर पलते हैं। और ऊपर से आँखें दिखाते हैं। हमारी बिल्ली हमीं को म्याऊँ ?"

सूरज ने नपे-तुले पर मजबूत शब्दों में जवाब दिया—"सन्नू लाल, तुम पुरानी दुनिया के आदमी हो। अब ऐसा पुश्तैनी ऊँचा-नीचा कोई काम नहीं होता। शहर में मंदिर के पुरोहित के बेटे म्युनिसिपैलिटी में जमादारों के ऊपर लगे हैं और लाला का बेटा चमड़े के कारखाने में काम करता है। उनकी जात बिगड़ नहीं गई और तुम गाँव में यहाँ बेकार की धौंस जमाते हो।"

सन्नू लाल फिर चिल्लाया—"ठाकुर साहब का रुतबा तुझे मालूम नहीं। इनकी जमींदारी कितनी बड़ी है ? तीन गाँवों में इनकी ठकरास चलती है।"

सूरज बोला—"सन्नू लाल, तुम्हें पता नहीं जमींदारी खत्म हुए कितने साल हो गये।"

अब्दुल गनी ने बीच-बचाव करते हुए कहा—"जाओ भाई सन्नू लाल तुम वापिस जाओ। इस छोकड़े से क्या बात करना। यह अब होशियार हो गया है। घूरे राम, तुम चले जाना ठाकुर माधो सिंह के घर, जब तुम्हारा खेत का काम हो जाये।"

जब सन्नू लाल लाठी और पैर पटकता हुआ निकल गया तो अब्दुल गनी ने पुचकार कर सूरज को अपने पास बुलाया और खाट पर बैठाकर पूछा—"तुम तो अखबार पढ़ते हो बेटा। जरा बताओ नयी खबरें कौन-सी हैं? हम लोग तो यहाँ गाँव में कुएँ के मेंढक की तरह हैं। तीन रोज बाद कभी कस्बे का हिन्दी अखबार आता है। उसमें भी पूरी और सच्ची खबरें

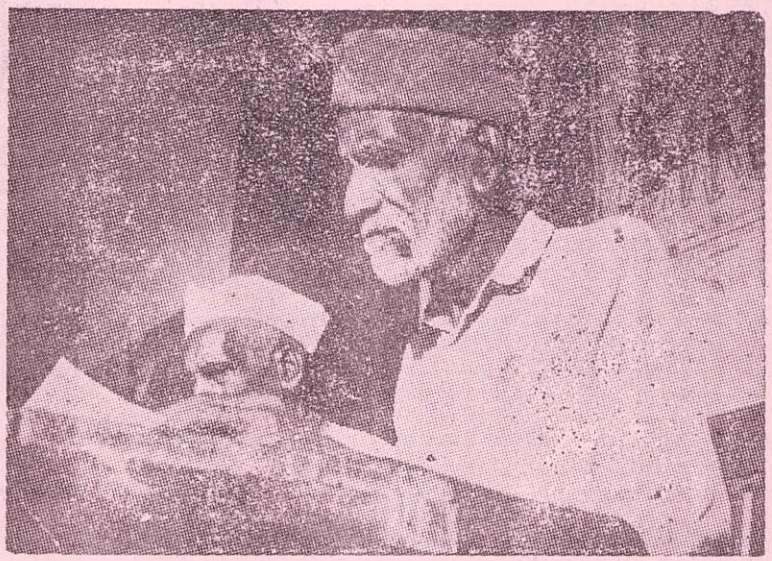

कहाँ आती हैं। सरकारी प्रोपेगैंडा ही आता है। लोगों का तो उस पर से ऐतबार ही उठ गया है। आज कुछ और कल कुछ। एक सरकार गई कि दूसरी सरकार आने पर पुरानी सरकार की हर बात को झूठा साबित करती है। किसकी सच मानें?"

सूरज ने कहा—"शहर में तो हमें पता चला है कि गरीब और हरिजन लोगों को ऊँची जात वाले, जो अपने को सवर्ण कहते हैं, बड़ा तंग कर रहे हैं। कहीं उनकी झोंपड़ियाँ जला देते हैं, कहीं उन्हें जिंदा जलाते हैं, कहीं उन्हें पानी नहीं भरने देते, और कहीं उनके कुंए में जहर डाल देते हैं।

एक जगह तो कुएं से पानी भरने पर सवर्णों ने हरिजन की आंखें ही निकाल लीं। क्या यही शास्त्रों में लिखा है ? क्या मनुष्य का मनुष्य के साथ यही सलूक उसे स्वर्ग ले जायेगा ? उनके भगवान को क्या यही पसंद है ?"

अब्दुल गनी ने कहा—"मैं हिन्दू तो नहीं हूँ बेटे, जो तुम्हें शास्त्रों के श्लोक सुनाऊँ। पर है यह सब गलत। जो इन्सान को इन्सानियत नहीं सिखा सकता, वह सच्चा मजहब कैसे हो सकता है ?"

गनी चाचा की बातों को ध्यान से सुनकर सूरज बोला—"ऐसे अत्याचार के काम जो लोग करते हैं, उन्हें सरकार सजा भी दे रही है। पर एक तो देश में गाँव-देहात बहुत दूर दराज तक हैं। उनमें बसने वाले लोग बहुत ही बेपढ़े-लिखे हैं। वे डरते हैं। मालिक, हुक्काम, अफसर, पुलिस, जमींदार का डर उनके मन में गहरा बैठा हुआ है। फिर उन्हें ये कारिंदें, पुरोहित और भगवान के एजेंट भी अलग धमकाते रहते हैं। क्या होगा बेचारे गाँव के गरीबों का ? क्या कभी उनका नसीब बदलेगा ?"

अब्दुल गनी ने दार्शनिक अंदाज से कहा—"सब दिन होत न एक समान। आयेंगे, आयेंगे, गरीबों के भी दिन आयेंगे।"

☼ ☼ ☼

सन्नू लाल वहाँ से गया तो मन ही मन आग-बबूला होकर। उसे अब्दुल गनी का इस तरह बीच में आ जाना जरा भी अच्छा नहीं लगा। उसने अपने मन में एक योजना बनाई। गाँव में जहाँ एक कोने पर सीमा से बाहर हरिजन बस्ती थी, उसी के पास गाँव के खाटिक, कसाई, दो-चार मुसलमान, एक नाई, जूते वाले और कोयले, लकड़ी, बांस की दुकान थी। थोड़ी दूर पर लाला का पक्का मकान था। वहीं पास में कपासवाले का गोदाम था।

सन्नू लाल ठाकुर माधो सिंह की कोठी के पास बाहर ही रहता था। उसने ठान लिया कि वह सूरज से बदला लेकर ही रहेगा। 'ये साले कमजात वाले' से कम शब्दों में वह उन्हें याद नहीं करता था। उसने बेलछी, विल्लूपुरम्, राजस्थान, मारवाड़, कंझावला के नाम भी सुने थे। उसके लिए भारत की राजनीति का कोई मतलब नहीं था। कांग्रेस गई। जनता पार्टी आई। पर सन्नू लाल उसी तरह "कोऊ नृप होहिं हमहिं का हानी। चेरी छांड़ि हवै

है नहिं रानी।" वाली चौपाई पढ़ता जाता था।

नागरिक-अधिकार, स्वतन्त्रता, समानता, भाईचारा ये सब शब्द उसके लिए मानी बे-मानी थे।

एक दिन सन्नू लाल दुकानदार लाला से बात कर रहा था कि इसी बीच गाँव के मंदिर के पुजारी 'पंडित जी' आ गये। तीनों की बातें कुछ इस तरह होने लगीं।

सन्नू लाल---"लाला, सुना तुमने, कैसा घोर कलयुग आ गया। वे कहते हैं कि जैसे ब्राह्मण, ठाकुर और बनिया, वैसे ही भंगी, चमार और डोम। सब बराबर माने जायेंगे। ऐसा कहीं हुआ है? कभी हुआ भी था जो आज हो जाएगा?"

लाला---तभी तो आजकल भगवान का कोप हो रहा है। देखो कैसी बाढ़ आई है?

पंडित जी ने जोर देकर कहा---"सब पापों का परिणाम है। जैसा करो, वैसा भरो। मैं कहता हूँ यह सब इस दुष्ट गांधी की बदमाशी है। सब लोग उसे महात्मा कहते हैं महात्मा। मैं उसे दुरात्मा कहता हूँ। सब जात बराबर है—यह प्रचार उसी ने शुरू किया था। अब भुगतो।"

सन्नू लाल---"उसी की वजह से जमींदारी खत्म हो गई। और ठाकुर साहब की ठकरास भी धुँआ हो गयी।"

लाला---"अरे ये सब रासन, 'कंठरोल' सब व्यौपार सरकार ने हाथ में ले लिया, सो भी उसी गांधी बाबा के कहने से नेहरू ने किया। वरना

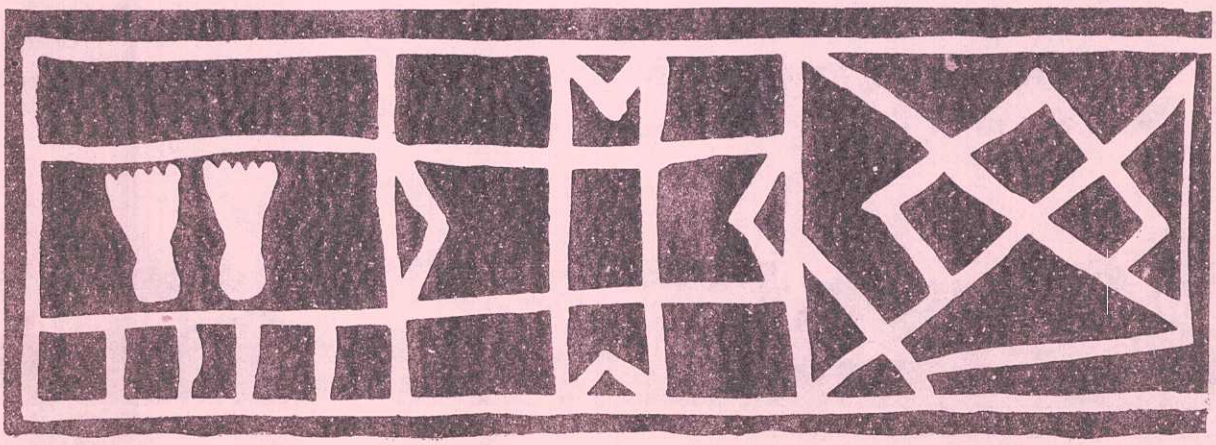

पहले कहीं एक से रेट होते थे। बिल्कुल नहीं। अरे अब तो तिजोरी में गहने भी रखने का डर लगता है। सोने पर भी सरकार ने कंठरोल लगा दिया।"

सन्नू लाल--"और तो और कभी होली-दीवाली के मौके पर पी लेते थे, मौज उड़ा लेते थे। अब वह मौज भी गयी। इस सरकार ने तो नशा-बन्दी भी कर दी है।"

पंडित जी--"हमारे यहाँ बच्चे भगवान के प्रतिरूप कहे गये हैं। देखो बाल कृष्ण का कितना महात्म्य पुराणन में लिखा है। इंदिरा के बेटे संजय ने सब की नसबन्दी करा दी। अगर बच्चे ही पैदा नहीं करने तो शादी-ब्याह क्यों करे हैं। और मजे की बात यह है कि मुसलमानों को कई शादियाँ करने की छूट दे रखी है। हिंदू को इन्होंने गूंगी गऊ समझ रखा है। जिधर चाहो उधर उन्हें हांक दो, कौन पूछने वाला है?"

जब ये बातें हो रहीं थीं तब सूरज वहाँ आ पहुँचा। उसके हाथ में अखबार था। उसने जोर-जोर से पढ़ना शुरू किया: "सुनो हाल के आंकड़े– १ अप्रैल १९७६ से ३१ मार्च १९७७ तक उत्तर प्रदेश में हरिजनों पर अत्याचार: १७४ मारे गये, ५,७५५ अन्याय के मामले रजिस्ट्रर्ड कराये गए। मध्य प्रदेश में ६३ मरे, और ३,७९८ मामले रजिस्ट्रर्ड कराये गये। राजस्थान में २७ मारे गये और ४३५ मामले रजिस्ट्रर्ड कराये गये...।"

सुनते ही सन्नू लाल ने कहा--"सब झूठ है। अखबार वाले भी आजकल आग में तेल डालते हैं। उनका तो यह पेशा ही हो गया है—खूब भड़कीली खबरें छापों, खूब खपत बढ़ाओ।"

सूरज--"सरकारी आंकड़ें क्या झूठे होते हैं?"

लाला--"अरे, सरकार कौन सी साधू महात्माओं की है। उन्हें तो केवल वोट चाहिए।"

पंडितजी—"मुसलमान, हरिजन के वोट इस तरह उनके पक्के हो जाते हैं।"

सूरज—"यह सब बुद्धि आप लोगों की है। सरकार तो आप सब वोटों के बहुमत से बनी है। आप तो ऊँची जात वाले हो क्या आपके वोट दिये बिना ही उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान में सरकार बन गई ?"

"इसके मुँह लगना बेकार है। शहर जाकर इसकी जबान बहुत लम्बी हो गयी है। लातों के भूत बातों से थोड़े ही मानते हैं—" लाला बोला।

सूरज ने सोचा कि मैं अकेला हूँ। यहाँ खड़े रहना खतरे से खाली नहीं है। तीनों मिलकर पिटाई शुरू कर दें तो क्या होगा ? वह अखबार लेकर भाग गया। ये आंकड़े 'पायोनीयर' और 'ब्लिट्ज़' के सितम्बर १६ के के आखिरी पेज पर "हिन्दुस्तान हमारा" से लिये गये थे।

सन्नू लाल ने कहा—"अरे वह कोई अखबार है 'ब्लिट्ज' यों ही सनसनीखेज चीजें छापता है।"

"और इसका आखिरी पन्ना वो साहब बड़ा चटपटा लिखते हैं।"

"अजी वह ख्वाजा अहमद अब्बास। भला वह भी कोई लेखक है।" पंडितजी ने जोड़ दिया।

लाला सबसे अधिक सुखी था, क्योंकि वह 'मोफस्सिल' दैनिक 'सवेरा' के बाजार भाव के पन्ने के सिवा कोई खबर नहीं पढ़ता था। चौपतिया अखबार उनके यहाँ परचून की पुड़िया बांधने के काम आता था इसलिए लगा रखा था। अखबार गाँव में वैसे ही कम आते थे। किताबों की एक दुकान जैसी चीज थी। उसी का मालिक अखबार मंगाता था। दूसरे दिन पढ़कर वह लाला को दे देता था। लाला उसे आधे दाम देकर ले लिया करता। मेले-ठेले में किताब वाले की बिक्री खूब होती थी। किस्सा तोता मैना, किस्सा लैला-मजनूं

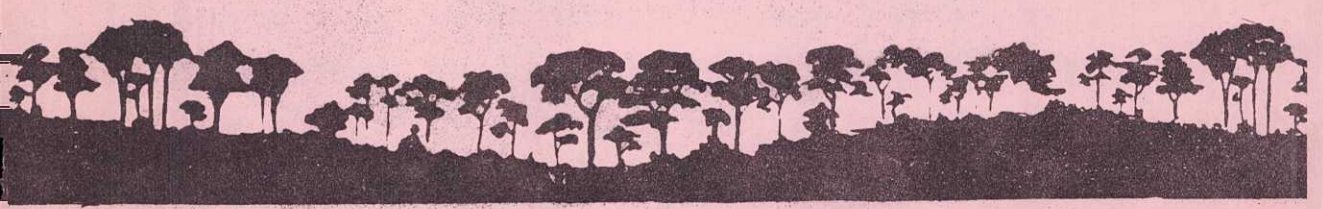

जैसी किताबें वह रखता था और साथ ही असली प्रेमशास्त्र की तस्वीरों वाली किताबें, जादू-टोने, ज्योतिष,–भविष्य, मंत्र-तंत्र, टोटके, मारण-उच्चारण सिद्धि की किताबें भी खूब बिकती थीं। लाला ने एक हनुमान ज्योतिष खरीदी थी किसी जमाने में।

सूरज अपने दोस्तों से कहता था—"यह सब बकवास है इसे क्यों पढ़ते हो ? सिनेमा के गाने और किस्से पढ़कर क्या मिलेगा ? अरे, सब मन बहलाने के बहाने, तुम लोगों को मीठा जहर पिला रहे हैं। उनका बस चले तो तुम्हारे दुश्मन हमेशा तुम्हें बेपढ़ा-लिखा और निपट जाहिल ही बना रहने दें। समझे ? उससे उनका फायदा होता है। अंगूठा करा लिया चाहे जितना करजा और सूद बढ़ाते जाओ कौन पूछने वाला है ? लिखकर सब नौजवान बराबरी की बात समझने लगेंगे। और अपने हकों के लिए लड़ेंगे।"

उसकी बात और दोस्तों की समझ में आ गई। दो-चार दोस्तों ने, जो खाली वक्त ताश खेलने में समय बरबाद करते थे, किताबों की छोटी एक लाइब्रेरी बनाई। एक अभ्यास मंडल खोला। वे हर हफ्ते मिलने लगे और देश-विदेश की, ज्ञान-विज्ञान की बातें सूरज से और किताबों से समझने लगे।

ठाकुर, सन्नू लाल, लाला, पंडितजी इन सब पुराने ढर्रे के लोगों के मन में तो जैसे आग लग गई। उन्हें लगा कि उनके सिंहासन डोलने लग गये हैं, और क्रान्ति अब बिल्कुल उनके पैरों तले की जमीन खिसका रही है। अब तो जैसे प्रलय आने वाली ही है। सब ने सोचा—सूरज ही इस सारी शरारत की जड़ है।

सन्नू लाल ने मन ही मन में सोचा—क्यों न इस जड़ को ही खत्म-कर दिया जाये ?

पर यह कैसे करे ?

जहर वह उसे दे सकता नहीं। मारपीट में पकड़े जाने का डर है। एक तरकीब सूझी कि उसकी झोंपड़ी और उसके जैसे सभी और नौजवानों की झोंपड़ियों में रात के वक्त, जब वे सो रहे हों, आग लगा दी जाये। इसके लिए उसने किरासिन से सने चिथड़ों से बंधे पलीते तैयार कर लिए। रात के घुप्प अंधेरे में इन पलीतों में आग लगा कर उस बस्ती की ओर फेंकने थे।

काम चुपचाप करना था। किसी की मदद लेने से चार मुँह चार बातें होने का डर था।

अमावस की रात की योजना पूरी बनाई गई। सन्नू लाल मुंह को एक बड़ी पगड़ी से बांधकर—ताकि चेहरा नजर न आये, मकान के पिछवाड़े से लकड़ी कोयलेंवाले की टाल से गुजरते हुए उस जगह पहुँच गया, जहाँ से झोंपड़ियों तक पलीते फेंके जा सकते थे।

हवा अच्छी चल रही थी। सन्नू लाल को बड़ा ही राक्षसी आनन्द आ रहा था—सारा मामला आनन-फानन में खत्म हो जायेगा। साले भीतर खाटों पर सो रहे हैं। जब तक जागेंगे सारे बांस और फूस की छतें सुलग चुकी होगीं। सारे इस तरह जलकर भस्म हो जायेंगे जैसे रामायण में रावण की लंका जलकर स्वाहा हो गयी थी। और सब जीते जी नरक की अग्नि में 'स्वाहा' हो जायेंगे। पंडितजी सन्नू लाल को बड़ी आशीस देंगे। पेड़े–परशाद बांटेंगे। मंदिर में बड़ी पूजा होगी...।

☼ ☼ ☼

पर कहावत है 'मेरे मन कछु और है, करता के कछु और।'

हवा का रुख उलटा हो गया। आग हरिजन बस्ती की ओर फैलने के बजाय, टाल-कोयलेवाले मकान की ओर लपककर आ गईं। लपटें, लाला

के मकान के पास तक पहुँच गयीं। सूरज के मकान में आग लगी ही थी कि शोर हुआ—"आग, आग!!"

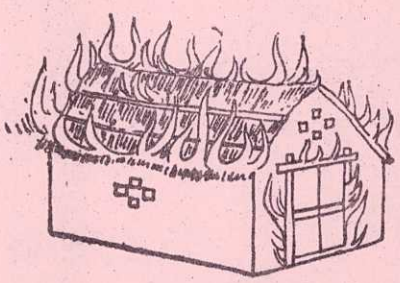

सारे हरिजन टोले के लोग जाग पड़े। किसी ने बालटी पकड़ी, किसी ने घड़े उठाए और किसी ने डोल। सब कुएं से ला-लाकर आग पर फेंकने लगे। जिसे कुछ हाथ नहीं लगा वह मिट्टी उठा-उठाकर ही आग पर फेंकने

लगा और इस तरह उस हिस्से में लगी आग पर काबू पा लिया गया। जहाँ सबसे ज्यादा नुकसान होने का डर था, वहीं सबसे कम हुआ।

सवर्ण लोगों के संगठित अत्याचारों से हरिजनों में एक नई एकता की चेतना आ गई थी। वे चाहे कितनी ही छोटी-छोटी जातियों-उपजातियों में बंटे हों, संकट के समय वे एक हो जाते थे। एक-दूसरे की मदद को दौड़ते थे।

मुसलमान अब्दुल गनी, किताब वाला शांति परशाद सब उनकी मदद को दौड़े आये। जुलाहा भी, सुतार बढ़ाई भी, लोहे वाला भी, कुम्हार भी, दरजी भी···

बड़े लोगों को बचाने कोई नहीं आया। एक तो उनके कुएं दूर पर थे। उनमें कइयों के घर कहार पानी भरते थे और वे अपनी झोंपड़ियाँ बचाने में लगे थे। दूसरे, उनके मकानों में बल्लियाँ बहुत लगी थीं। उनके मकानों के पास पेड़ भी बहुत थे। लकड़ी के जंगले ओर अहाते के बाहर फाटक थे। सब जल उठे। कोयले की टाल वाले के यहाँ किरासीन का छिपा हुआ स्टाक था। उसने आग पकड़ ली। सारे घासलेट के टीन देखते-देखते आग के शोलों की चपेट में आ गये। सब ओर हाहाकार मच गया।

"पानी, पानी—चिल्ला रहे हैं सब लोग।"

लाला, पंडितजी, ठाकुर के घर वाले, भाग रहे हैं--सन्नू लाल इधर से उधर हुकुम दे रहा है। पर सुनने वाला कौन है ?

जब ऐसी आग फैल जाये, सूखे का मौसम हो, अनाज के छिपे भंडार घास के पूले की तरह जल उठें तो सहानुभूति के दो-चार बूंद आँसू उसे कहाँ बुझा सकते हैं ?

आग और पानी का सनातन सम्बन्ध यहाँ टूट गया था।

जहाँ आग थी, वहाँ पानी नहीं था। जहाँ पानी था, वहाँ आग नहीं पहुँच पाई थी।

पंडित जी को यह बताना चाहिए था कि जब यज्ञ में बहुत-सी आग जलाई जाती हैं, धुंआ आसमान को छूता है, तब जाकर वरुण देवता प्रसन्न होते हैं, तभी ऊपर से वर्षा होती है। "यज्ञात् भवति पर्जन्यः—पर्जन्याद् अन्न संभवः" (यज्ञ से पर्जन्य या वर्षा होती है, वर्षा से अन्न उपजता है···)

यहाँ तो अन्न भी आग में स्वाहा हो रहा था और पानी दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहा था। गाँवों में दमकल तो होती नहीं। पुलिस चौकी वाले असहाय नजरों से देख रहे थे—पानी लाने वाले 'बेगार' मजूर भी नहीं थे।

सवेरा हुआ। पर 'सवेरा' अखबार वहाँ नहीं पहुँचा। चिनगारियाँ थीं और राख थी। अंगारे थे और धुंआ था। पानी सिर्फ देखने वालों की आंखों में था।

जब कोई दूसरे का घर जलाने जाता है तो उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि उसका घर पानी की नींव पर नहीं खड़ा है।

☼ ☼ ☼

गाँव के इस अग्निकांड के सात दिन बाद पास थाने से पुलिस जाँच करने पहुँची। सब लोगों के बयान लिये गये। सबने आग लगने के अलग-अलग कारण बताये।

ठाकुर साहब ने कहा—"अजी, यह सब शैतानी नीच जात वालों की है। ये चाहते हैं कि हम सब लोग अपने घरबार छोड़ कर भाग जायें और ये सब कुछ लूट लें। ये 'करांती' करना चाहते हैं न। इनकी आंखों में हम कांटे की तरह गड़ते हैं।"

सन्नू लाल—'थानेदार साहब', उस अमावस की रात को मेरी नींद उचट गई। मैं पिछवाड़े गया तो देखता क्या हूँ कि हरिजन टोले से बाकायदा

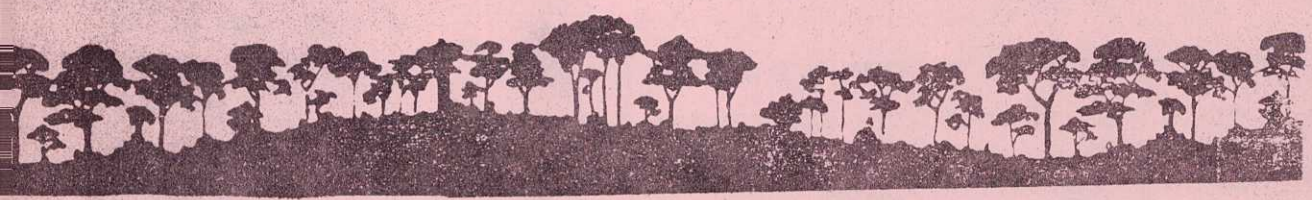

किरासन में सने चिथड़ों के गोले इस टालवाले की दुकान की ओर फेंके जा रहे हैं, एक-दो नहीं, कई सारे।

पंडितजी--"मुझे तो यह सब उस 'दादा' की बदमाशी दीखती है। काम-धंधा कुछ करता नहीं। गाँव वालों को उकसाता रहता है। दिन-भर

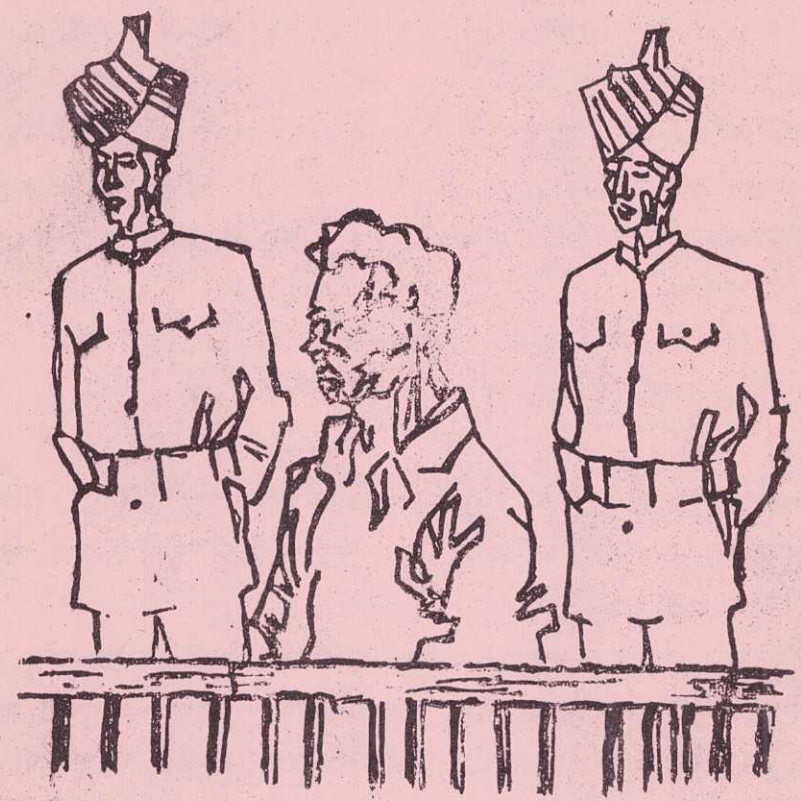

जुआ-ताश, शराब और सिगरेट, ठेका क्या चलाता है गुंडो को पालता है। उसी ने यह आग लगायी है।"

लाला--"मेरा करजा बहुत बरसों से उस ग्वाले ने नहीं दिया था। उसी ने यह सोचा—मेरा सारा अनाज का भंडार जला दिया जाये। उसी को पकड़कर ले जाइये। कितना ब्याज उसे देना है मेरा।"

घूरे राम--"पता नहीं, भगवान का ही शायद कोई प्रकोप हो गया। उस रात मैं एक दम जागा तो छप्पर धू-धू जल रहा था। उधर सवर्ण टोले से कोई आदमी पगड़ी में मुंह छिपाये बराबर इधर पलीते फेंके जा रहा था।"

सूरज--"मैं जागा और उसके पीछे भागा। का सन्नू लाल ही था।

अब चाहे कितना ही मुकरे। शरारत उसी की है।"

सन्नू लाल डंडा लेकर उसे मारने दौड़ा--"बिना किसी सबूत के ऐसे किसी भले आदमी की इज्जत-आबरू तू ले लेगा तो तुझे काले पानी की सजा दिलवाऊँगा। सब कोट-कचहरी वाले वकील मेरे दोस्ते हैं, समझे।"

"इतना आग बबूला होने की क्या बात है? चोर की दाढ़ी में तिनका।"

सूरज ने पुलिस के आगे एक बुझा हुआ पलीता लाकर रख दिया और बोला—"सन्नू लाल के घर के सामने के पेड़ की यह टहनी है या नहीं यह वहाँ जाकर खुद ही देख लीजिये।"

सन्नू लाल के घर के सामने पेड़ की टहनियाँ टूटी हुई थीं। पर सन्नू

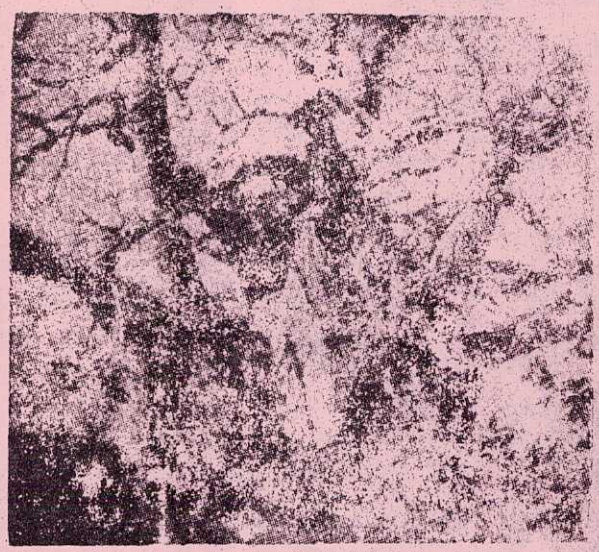

ने भोले भाव से कहा—घर में जलाने के लिए हम हमेशा उस पेड़ की ही डालियां काट लेते हैं।

कोई फैसला होना नाम-मुमकिन था। सब बयान लिखकर थानेदार साहब अपने हेडक्वार्टर चले गये। जाब्रों की खानापूरी हो गई। ताफिया तो कभी होने वाला था ही नहीं।

गाँव में आग क्यों लग जाती है? कौन लगाता है उसे? एक चिंगारी तमाम खेत को जला देती है। 'घर को आग लग गई, घर के चिराग से।

ऐसी आग को बुझाने वाला पानी कहाँ से आयेगा ?

बुद्ध ने कहा था कि जहाँ सूखी घास न हो, वहाँ चिंगारी गिरे भी तो आग कैसे फैल सकती है ?

पर यहाँ पानी के पेट में भी आग ही आग है ।

सूरज जानता है कि जहाँ ऊपर से समुंदर का पानी है, उसके भीतर ज्वालाग्राही तेल भी हो सकता है । वह जानता है कि कोई 'सागर-सम्राट' ही उसे खींचकर ला पायेगा । कोई अगस्त मुनी ही इस सागर को सोखेगा । वरना यह महासागर तो नमक की खान है---इसमें जो जायेगा नमक हो जायेगा ।

आग और पानी का संबंध सनातन है । पर मनुष्य की पैदा की हुई आग और मनुष्य की आयोजित की हुई सिंचाई या नहर, इनके संबंध सनातन नहीं हैं । वे नित्य नूतन होते हैं ।

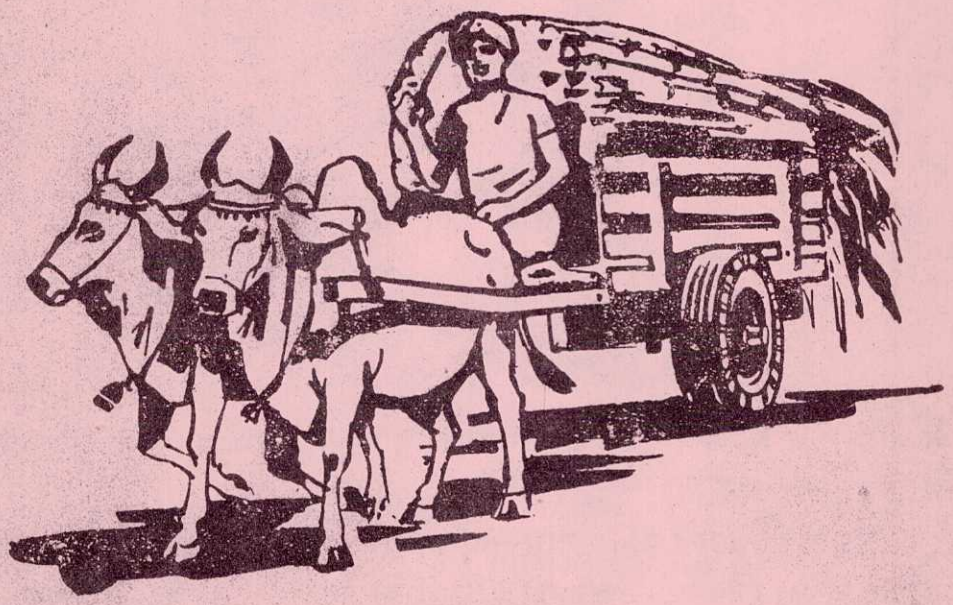

ग्रामीण साहित्य माला के अन्य पुष्प

1.	समाज का अभिशाप	ब्रह्म प्रकाश गुप्त
2.	मेरे खेत में गाय किसने हांकी ?	जोगेन्द्र सक्सेना
3.	नयी जिन्दगी	गणेश खरे
4.	कल्याण जी बदल गये	अ० अ० अनन्त
5.	राधिया लौट आई	कमला रत्नम्
6.	एक रात की बात	इन्दु जैन
7.	बिटिया का गीत	शिवगोबिन्द त्रिपाठी
8.	जीवन की शिक्षा (लोक कथाएं)	नारायण लाल परमार
9.	शहर का पत्र गाँव के नाम तथा बढ़ते कदम	डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' विमला लाल